पाठ 19

व्यंजनांत पुंलिंग और स्त्रीलिंग संज्ञाएँ तथा विशेषण; सम्राट् अशोक की कहानी, गीता के चार श्लोक

19.1 सं. व्यंजनांत पुंलिंग और स्त्रीलिंग संज्ञाएँ: हम मुख्य-मुख्य स्वरांत संज्ञाओं और विशेषणों के रूप सीख चुके हैं। कुछ शेष स्वरांत संज्ञाओं के बारे में हम बाद में पढ़ेंगे। इसके अलावा एक अन्य प्रमुख वर्ग व्यजनांत संज्ञाओं और विशेषणों का है। इन संज्ञाओं और विशेषणों के रूप स्वरांत संज्ञाओं और विशेषणों के रूपों से थोड़ा अलग प्रकार से चलते हैं। हम नीचे **राजन्** (राजा) और **विद्वस्** (विद्वान्) व्यंजनांत पुंलिंग संज्ञाओं के रूप दे रहे हैं।

	राजन्			**विद्वस्**		
	एकव	द्विव.	बहुव.	एकव	द्विव.	बहुव.
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	**राज्ञ:**	विद्वांसम्	विद्वांसौ	**विदुष:**
तृतीया	राज्ञा	**राजभ्याम्**	**राजभि:**	विदुषा	**विद्वद्भ्याम्**	**विद्वद्भि:**
चतुर्थी	राज्ञे	**राजभ्याम्**	**राजभ्य:**	विदुषे	**विद्वद्भ्याम्**	**विद्वद्भ्य:**
पंचमी	राज्ञः	**राजभ्याम्**	**राजभ्य:**	विदुषः	**विद्वद्भ्याम्**	**विद्वद्भ्य:**
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	राज्ञि	राज्ञोः	**राजसु**	विदुषि	विदुषोः	**विद्वत्सु**

इन संज्ञाओं के संबोधन-एकवचन के रूप क्रमशः **राजन्** और **विद्वन्** हैं। **राजन्** का सप्तमी में वैकल्पिक रूप **राजनि** भी है।

19.2 सं. इन संज्ञाओं के रूपों को रटने की आवश्यकता नहीं है। इनमें स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली समानताओं के आधार पर हम इन्हें आसानी से सीख सकते हैं। आइए, पहले हम **'राजन्'** संज्ञा को लें।

आप देखेंगे कि पहले खाने में जो पाँच रूप दिए हैं इनमें राजा अंश समान है। राजा के बाद दूसरे छायादार भाग में सात रूप दिए हैं (छह राजा के बाद **भ्** से शुरू होने वाले रूप हैं और एक सप्तमी विभक्ति का बहुवचन का रूप है)। इन सातों में राज अंश समान है। शेष नौ रूपों में **राज्ञ्** अंश समान है। इस प्रकार इन रूपों में पाई जाने वाली समानताओं को समझकर आप आसानी से राजन् संज्ञा के सात कारकों और तीन वचनों में 21 रूप बना सकते हैं। आइए देखें इनके रूप कैसे बनते हैं:-

क) पहले दो रूपों **(राजा, राजानौ)** को सीखकर हम **राजानौ** के अंत के **नौ** के **औ** को **अ:** (1.3), अम् (2.1) में बदलकर पाँच रूप बना सकते हैं। प्रथमा

और द्वितीया विभक्ति का द्विवचन हमेशा समान होता है। इस प्रकार **राजा, राजानौ, राजानः) राजानम्** और **राजानौ** रूप बनते हैं।

ख) द्वितीया विभक्ति के बहुवचन के **राज्ञः** (2.3) के रूप को सीखकर हम उन नौ रूपों को बना सकते हैं जिनमें राज्ञ अंश समान है। **राज्ञः** के अंत के **ज्ञः** को क्रमशः **आ, ए, अः, अः, ओः, आम् इ** और **ओः** में बदलने से क्रमशः 3.1, 4.1, 5.1, 6.1, 6.2, 6.3, 7.1 और 7.2 रूप मिलते हैं। इन्हें ठीक से समझने के लिए तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। इनमें पहले वर्ग में तृतीया चतुर्थी और पञ्चमी के एकवचन के रूप हैं **(राज्ञा, राज्ञे, राज्ञः)**, दूसरे वर्ग में षष्ठी विभक्ति के तीनों वचनों के रूप हैं **(राज्ञः, राज्ञोः, राज्ञाम्)** और तीसरे वर्ग में सप्तमी विभक्ति के एकवचन और द्विवचन के रूप हैं। **(राज्ञि, राज्ञोः)**। आप देखेंगे कि इन सभी रूपों में **राज्ञ्** अंश वैसा ही रहता है केवल **राज्ञ्** के बाद के स्वर और विसर्ग में परिवर्तन होता है।

ग) अन्त में, तृतीया विभक्ति के द्विवचन के राजभ्याम् (3.2) रूप को सीखकर हम मूल अंश **राज** से बाकी सात रूपों को बना सकते हैं। **राजभ्याम्** के अंत के **भ्याम्** के स्थान पर तृतीया बहुवचन में **भिः,** चतुर्थी और पंचमी बहुवचन में **भ्यः** रूप बना सकते हैं। सप्तमी विभक्ति का बहुवचन बनाने के लिए **भ्याम्** के स्थान पर **सु** रखना होगा। (3.2), (4.2) और (5.2) के **भ्याम्** के रूप हमेशा एक से रहते हैं।

इस सीधी-सी प्रक्रिया में हमें व्यंजनांत संज्ञाओं के रूप बनाने के लिए केवल चार रूपों (1.1, 1.2, 2.3 और 3.2) को याद करने की आवश्यकता होगी। परन्तु कुछ संज्ञाओं के सप्तमी का बहुवचन (7.3) बनाने के लिए कुछ संधि नियमों को जानना आवश्यक है जिनके बारे में हम आगे चलकर पढ़ेंगे। इसलिए हम सप्तमी के बहुवचन के रूप को भी याद किए जाने वाले पाँच रूपों में रख सकते हैं। सारणी में इन पाँच रूपों को मोटे अक्षरों में दिखाया गया है।

किसी भी व्यंजनांत पुंलिंग और स्त्रीलिंग संज्ञा के इन पाँच रूपों को सीखकर हम उसके सातों विभक्तियों के रूप चला सकते हैं। हम व्यंजनांत नपुंसकलिंग संज्ञाओं के बारे में अगले पाठ में पढ़ेंगे।

ऊपर दिए चरणों को ध्यान से पढ़िए। अब आप सारणी में मोटे अक्षरों में दिए पाँच रूपों के आधार पर **विद्वस्** संज्ञा के सभी रूप अपने आप बनाइए। (यहाँ इस बात का ध्यान रखें कि **विद्वस्** प्रतिपादिक रूप है जबकि **विद्वान्** प्रथमा विभक्ति का एकवचन का रूप है।)

टिप्पणी: व्यंजनांत संज्ञाओं के द्वितीया के बहुवचन (2.3) तथा पञ्चमी और षष्ठी के एकवचन (5.1, 6.1) के रूप हमेशा समान होते हैं। इसके अलावा, जैसाकि हम

पहले देख चुके हैं, सभी संज्ञाओं के प्रथमा और द्वितीया के द्विवचन के रूप तथा षष्ठी और सप्तमी के द्विवचन के रूप हमेशा समान होते हैं। सभी संज्ञाओं के छायादार खानों में दिए हुए रूपों में भी समानता पाई जाती है।

19.3 अ. अभी हमने संज्ञाओं के रूपों के निर्माण की जिस प्रक्रिया को पढ़ा है उसके अनुसार पुंलिंग संज्ञा **आत्मन्** (आत्मा) और विशेषण **महत्** (बड़ा) के पुंलिंग के रूप नीचे दिए गए खानों में लिखिए। अपने रूपों का मिलान पाठ के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए। (**आत्मन्** का संबोधन के एकवचन का रूप भी **आत्मन्** ही है।)

	आत्मन्			**महत्**		
	एकव	द्विव.	बहुव.	एकव	द्विव.	बहुव.
प्रथमा	**आत्मा**	**आत्मानौ**		**महान्**	**महान्तौ**	
द्वितीया		"	**आत्मनः**		"	**महतः**
तृतीया		**आत्मभ्याम्**			**महद्भ्याम्**	
चतुर्थी		"			"	
पंचमी		"			"	
षष्ठी						
सप्तमी			**आत्मसु**			**महत्सु**

19.4 सं. अब आप व्यंजनांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं **वाक्** (वाणी) और **दिश्** (दिशा) के रूप नीचे दी गई सारणी में लिखिए। अपने रूपों का मिलान पाठ के अन्त में दिए गए उत्तरों से कीजिएः

	वाक्			**दिश्**		
	एकव.	द्विव.	बहुव.	एकव.	द्विव.	बहुव.
प्रथमा	**वाक्**	**वाचौ**		**दिक्**	**दिशौ**	
द्वितीया		"	**वाचः**		"	**दिशः**
तृतीया		**वाग्भ्याम्**			**दिग्भ्याम्**	
चतुर्थी		"			"	
पंचमी		"			"	
षष्ठी						
सप्तमी			**वाक्षु**			**दिक्षु**

19.5 सं. हमने ऊपर विशेषण महत् के पुंलिंग में रूप बनाए हैं। **धीमत्** (बुद्धिमान) और **सुखिन्** (सुखी) जैसे अन्य व्यंजनांत पुंलिंग विशेषणों के रूप बनाने का भी वही तरीका है। **धीमत्** और **सुखिन्** विशेषणों के स्त्रीलिंग रूप **धीमती** और **सुखिनी** हैं और इनके रूप **नदी** की तरह चलते हैं। (इनके नपुंसकलिंग के रूपों के बारे में हम अगले पाठ में

पढ़ेंगे।) आपको कुछ संज्ञाओं और विशेषणों का परिचय देने के लिए हम उनके केवल पाँच रूप दे रहे हैं। इनकी सहायता से पूरी रूपावली बनाने का अभ्यास कीजिए।

संज्ञाएँ		**1-1**	**1-2**	**2-3**	**3-2**	**7-3**
धीमत्	(बुद्धिमान)	धीमान्	धीमन्तौ	धीमतः	धीमद्भ्याम्	धीमत्सु
बलवत्	(ताकतवर)	बलवान्	बलवन्तौ	बलवतः	बलवद्भ्याम्	बलवत्सु
सुखिन्	(प्रसन्न)	सुखी	सुखिनौ	सुखिनः	सुखिभ्याम्	सुखिषु
भवत्	(आप)	भवान्	भवन्तौ	भवतः	भवद्भ्याम्	भवत्सु
सम्राज्	(राजा)	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राट्सु
भगवत्	(ईश्वर)	भगवान्	भगवन्तौ	भगवतः	भगवद्भ्याम्	भगवत्सु
धनिन्	(धनवान)	धनी	धनिनौ	धनिनः	धनिभ्याम्	धनिषु
स्वामिन्	(मालिक)	स्वामी	स्वामिनौ	स्वामिनः	स्वामिभ्याम्	स्वामिषु
हस्तिन्	(हाथी)	हस्ती	हस्तिनौ	हस्तिनः	हस्तिभ्याम्	हस्तिषु
पथिन्	(मार्ग)	पन्थाः	पन्थानौ	पथः	पथिभ्याम्	पथिषु
चन्द्रमस्	(चन्द्रमा)	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमस्सु
श्वन्	(कुत्ता)	श्वा	श्वानौ	शुनः	श्वभ्याम्	श्वसु
सरित्	(नदी)	सरित्	सरितौ	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरित्सु
विपद्	(स्त्री. विपत्ति)	विपत्	विपदौ	विपदः	विपद्भ्याम्	विपत्सु

19.6 नीचे दिए वाक्यों को पढ़िए और इनका हिन्दी में अनुवाद कीजिए?

क. 1. प्राचीनकाले सर्वेषु देशेषु राजानः एव शासनम् अकुर्वन्। 2. अधुना राज्ञां संख्या अतीव अल्पा[1]। 3. प्राचीनेषु राजसु बहवः राजानः क्रूराः, स्वार्थपराः[2], दुष्टाः च आसन्। 4. परं[3] तेषु एव केचिद्[4] अपरे[5] दयालवः[6] आसन्, जनानां च हितम् अकुर्वन्। 5. भारतस्य इतिहासे अशोकः एकः महान् सम्राट् अभवत्। 6. सोऽपि पूर्वम् अति क्रूरः आसीत्। 7. एकस्मिन् महति युध्दे असंख्यान् जनान् मृतान् दृष्ट्वा तस्य मनसि परिवर्तनम् अभवत्। 8. सः युध्दं क्रूरतां च सर्वथा[7] अत्यजत्। 9. अशोकः बौद्धधर्मस्य अनुयायी अभवत्।

(**शब्दार्थः**—1. कम, 2. स्वार्थी, 3. लेकिन, 4. **केचन** = **केचित्** —कुछ, 5. **अपरे**—अन्य, 6. दयालु, 7. पूर्ण रूप से)

ख. 1. सम्राट् अशोकः महात्मनः[1] बुद्धस्य शिक्षायाः प्रचारं चतसृषु दिक्षु अकरोत्। 2. सम्राजः सभायां बहवः विद्वांसः आसन्। 3. सः तैः विद्वद्भिः सह धर्मस्य शासनस्य[2] च विषये सदा अमंत्रयत। 4. जनानां हिताय सः धर्मस्य शासनस्य च सिध्दान्तान् शिलासु[3] लेखितुम् आदिशत्[4]। 5. तस्य बहवः शिलालेखाः अधुनापि यत्र-तत्र विद्यन्ते[5]। 6. सः स्वपुत्रं महेन्द्रं स्वपुत्रीं संघमित्रां च बौद्धधर्मस्य प्रचाराय श्रीलङ्कां प्रैषयत्[6]। 7. सम्राजः अशोकस्य राज्ये सर्वे जनाः सुखिनः आसन्। 8. अद्यापि भारतीयाः तं सम्राजं सादरं स्मरन्ति।

(**शब्दार्थ**:— 1. **महात्मन्**- महात्मा, 2. **शासनम्**- प्रबंध व्यवस्था, 3. **शिला**- चट्टान, 4. **आ-दिश्** (आदिशति) आज्ञा देना, 5. हैं, पाए जाते हैं, 6. भेजा, **प्रेषयति**- भेजता है)

19.7 प. आइए, अब नीचे दिए गीता के श्लोक पढ़ें।

क. नैनं छिन्दन्ति[1] शस्त्राणि[2] नैनं दहति पावकः[3]।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो[4] न शोषयति मारुतः[5]॥2.23॥

ख. देहिनो[6]ऽस्मिन् यथा देहे कौमारं[7] यौवनं जरा।[8]
तथा देहान्तरप्राप्तिः[9] धीरः[10] तत्र न मुह्यति[11]॥2.13॥

(**शब्दार्थ**:— 1. **एनं न छिन्दन्ति**- इसे (आत्मा) को नहीं काटते, 2. शस्त्र, हथियार, 3. **न एनं पावकः दहति**- इसे आग जलाती नहीं, 4. **न च एनम् आपः क्लेदयन्ति**- और न इसे जल गीला करते हैं, 5. **न मारुतः शोषयति**- न हवा इसे सुखाती है, 6. **देहिन्**- शरीरधारी आत्मा, 7. बचपन, 8. बुढ़ापा, 9. **देह-अन्तर-प्राप्तिः** (मृत्यु के बाद आत्मा को) दूसरा शरीर मिल जाता है। 10. **धीरः**- बुध्दिमान व्यक्ति, 11. मोह में नहीं पड़ता, परेशान नहीं होता।)

ग. सर्वधर्मान्[1] परित्यज्य[2] मामेकं[3] शरणं व्रज[4]।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यः मोक्षयिष्यामि[5] मा शुचः[6]॥

घ. सुखदुःखे समे कृत्वा[7] लाभालाभौ[8] जयाजयौ[9]।
ततो युध्दाय युज्यस्व[10] नैवं[11] पापमवाप्स्यसि॥

(**शब्दार्थ**:— 1. सब धार्मिक विश्वासों को, 2. छोड़कर, 3. केवल मेरी अर्थात् ईश्वर की, 4. **शरणं व्रज**- आश्रय लो, शरण में जाओ, 5. **मुक्त कराऊँगा**-, **मोक्ष्**-मुक्त करना, 6. **मा शुचः** - शोकमत कर, 7. **समे कृत्वा**- समान समझकर, 8. लाभ और हानि, 9. जीत और हार, 10. तैयार हो जा, 11. **न + एवं**- इस तरह से नहीं, 12. प्राप्त करेगा।)

19.8 नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

1. हम आज इस पुस्तक को कक्षा में पढ़ेंगे। 2. अब वे क्या लिखेंगे? 3. हमारी माता जी हमारे लिए खाना पकाएँगी। 4. उनके द्वारा क्या खाया जा रहा है? 5. आपके द्वारा क्या किया जा रहा है? 6. ये चित्र मेरे द्वारा देखे जा रहे हैं। 7. हम घर जाना चाहते हैं। 8. कृपया यह काम पूरा करने के बाद ही घर जाएँ। 9. मैं भविष्य में अध्यापक बनना चाहता हूँ। 10. वह यहाँ आकर अपनी बात बताएगा।

अभ्यासों के उत्तर

19.3 नीचे दी हुई संख्याएँ कारक विभक्तियों का क्रम बताने के लिए हैं। संख्या 8 संबोधन कारक के लिए है।

आत्मन्-1. आत्मा, आत्मानौ, आत्मानः, 2. आत्मानम्, आत्मानौ, आत्मनः, 3. आत्मना, आत्मभ्याम्, आत्मभिः, 4. आत्मने, आत्मभ्याम्, आत्मभ्यः, 5. आत्मनः, आत्मभ्याम्, आत्मभ्यः, 6. आत्मनः, आत्मनोः, आत्मनाम्, 7. आत्मनि, आत्मनोः, आत्मसु, 8. हे आत्मन्।

महत्-1. महान्, महान्तौ, महान्तः, 2. महान्तम्, महान्तौ, महतः, 3. महता, महद्भ्याम्, महद्भिः, 4. महते, महद्भ्याम्, महद्भ्यः, 5. महतः, महद्भ्याम्, महद्भ्यः, 6. महतः, महतोः, महताम्, 7. महति, महतोः, महत्सु।

वाक्-1. वाक्, वाचौ, वाचः, 2. वाचम्, वाचौ, वाचः, 3. वाचा, वाग्भ्याम्, वाग्भिः, 4. वाचे, वाग्भ्याम्, वाग्भ्यः, 5. वाचः, वाग्भ्याम्, वाग्भ्यः, 6. वाचः, वाचोः, वाचाम्, 7. वाचि, वाचोः, वाक्षु, 8. हे वाक्।

दिश्-1. दिक्, दिशौ, दिशः, 2. दिशम्, दिशौ, दिशः, 3. दिशा, दिग्भ्याम्, दिग्भिः, 4. दिशे, दिग्भ्याम्, दिग्भ्यः, 5. दिशः, दिग्भ्याम्, दिग्भ्यः, 6. दिशः, दिशोः, दिशाम्, 7. दिशि, दिशोः, दिक्षु, 8. हे दिक्।

19.6 क. पुराने समय में सब देशों में राजा ही शासन करते थे। 2. अब राजाओं की संख्या बहुत कम है। 3. प्राचीन राजाओं में बहुत-से राजा निर्दयी, स्वार्थी और दुष्ट थे। 4. परन्तु उनमें से कुछ अन्य (राजा; दयालु थे और प्रजा का हित करते थे। 5. भारत के इतिहास में अशोक एक महान् सम्राट हुआ है। 6. वह भी पहले बहुत क्रूर था। 7. एक बहुत बड़े युद्ध में अनगिनत मरे हुए लोगों को देखकर उसके हृदय में परिवर्तन हो गया। 8. उसने युद्ध और निर्दयता को पूर्णरूप से छोड़ दिया। 9. अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया।

ख. 1. सम्राट अशोक ने महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का प्रचारा चारों दिशाओं में किया। 2. सम्राट की सभा में बहुत से विद्वान थे। 3. वह उन विद्वानों के साथ धर्म और शासन व्यवस्था के बारे में हमेशा सलाह करता था। 4. लोगों की भलाई के लिए उसने धर्म और प्रशासन के सिध्दान्तों को शिलाओं पर लिखने का आदेश दिया। 5. अशोक के बहुत-से शिलालेख आज भी जहाँ-तहाँ हैं। 6. उसने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र महेन्द्र और अपनी पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा। 7. सम्राट् अशोक के राज्य में सब लोग सुखी थे। 8. आज भी भारत के लोग उस सम्राट् को आदर के साथ याद करते हैं।

19.7 क. शस्त्र आत्मा को काटते नहीं है, आग इसे जलाती नहीं है पानी इसे गीला नहीं करते और न ही हवा इसे सुखाती है।

ख. जैसे इस शरीर में आत्मा बचपन से जवानी में और फिर बुढ़ापे में जाता है उसी प्रकार मृत्यु के बाद यह नए शरीर में प्रविष्ट होता है। बुद्धिमान व्यक्ति इस से परेशान नहीं होता।

ग. सब धार्मिक विश्वासों को छोड़कर तू मेरी शरण में आ। मैं तुझे सब पापों से मुक्त करा दूँगा। तु इस विषय में दुःखी न हो।

घ. तू सुख हो या दुःख, लाभ हो या हानि, जीत हो या हार सब को एक-सा समझ और युद्ध के लिए तैयार हो जा। इस प्रकार तुझे पाप नहीं लगेगा।

19.8 1. वयमद्य इदं पुस्तकं स्वकक्षायां पठिष्यामः। 2. अधुना ते (ताः) किं लेखिष्यन्ति? 3. अस्माकं माता अस्मभ्यं भोजनं पचति। 4. तैः (ताभिः; किं खाद्यते? 5. अधुना त्वया किं क्रियते? 6. मया इमानि चित्राणि दृश्यन्ते। 7. वयं गृहं गन्तुम् इच्छामः। 8. कृपया इदं कार्यं कृत्वा एव गृहं गच्छत। 9. अहं भविष्ये शिक्षको भवितुम् इच्छामि। 10. सः अत्र आगत्य स्वकथां कथयिष्यति।